24

कलीसिया का विस्तार

पूरे यहूदिया और सामरिया में और अन्यजातियों में जाना, 35-45 ई. (प्रेरितों 8-12)

1. कलीसिया का विस्तार (8:1-25)। –''यरूशलेम से लेकर'' (लूका 24:47) यीशु की बात पूरी हो चुकी है। अब अंतिम आज्ञा में दी गई भौगोलिक रेखाओं की ओर बढ़ने का समय है (प्रेरितों 1:8)। परन्तु लोगों के आन्दोलन बिना कोई लहर नहीं चलती; परमेश्वर की योजनाओं के साथ मानवीय योजनाओं के मिलने का एक और उदाहरण मिलता है। स्तिफनुस को मारकर उसके हत्यारों की प्यास नहीं बुझी थी। यह तो शेर के मुंह को खून लगने जैसा था। इससे पहले होने वाले सताव तो इसके सामने कुछ भी नहीं थे। अब फरीसी और सदूकी, याजक और भीड़ नवजात कलीसिया पर टूट पड़े थे। इसका असर सुसमाचार की आग बुझना नहीं बल्कि नई-नई जगहों पर इसकी ज्योति जलने के रूप में हुआ। केवल प्रेरित ही यरूशलेम में रहे। तितर-बितर हुए चेले सुसमाचार प्रचारकों की तरह सारे यहूदिया और सामरिया में प्रचार करने लगे। उनमें से केवल एक के काम को ही बताया गया है। सात डीकनों में से एक फिलिप्पुस ने सुसमाचार को सामरिया में पहुंचाया। छह सौ वर्षों से सामरी अलग लोगों के रूप में सुरक्षित थे। इसमें भी परमेश्वर का प्रबन्ध था। वे न तो यहूदी और न ही अन्यजाति थे, बल्कि मिले जुले थे। लगभग पिन्तेकुस्त[1] जैसे आश्चर्यकर्म के प्रदर्शनों से फिलिप्पुस का काम हुआ था; और उस इलाके की एक अनाम स्त्री और बहुत से नगरवासियों ने भी यीशु पर विश्वास किया था, अब बहुत से लोगों ने यीशु के एक चेले द्वारा पूर्ण सुसमाचार के प्रचार को सुनकर आनन्द से स्वीकार किया। एक बदनाम जादूगर, शमौन भी उन परिवर्तित लोगों में से एक था। फिलिप्पुस सुसमाचार का प्रचार और आश्चर्य के काम कर सकता था, परन्तु वह दूसरों को आत्मा की अलौकिक सामर्थ नहीं दे सकता था। ज़्योंकि वह शज़्ति केवल प्रेरितों के पास ही थी। सामरियों में प्रचार होने के कारण प्रेरितों का वहां जाना आवश्यक था। पतरस और यूहन्ना यरूशलेम से वहां आए, उस काम से संतुष्ट होकर उन्होंने नये बनने वाले मसीहियों पर हाथ रखे ताकि उन्हें आत्मा मिले। शज़्ति पाने की शमौन जादूगर की पुरानी भूख अब फिर जाग उठी। उसने पवित्र आत्मा की शज़्ति देने के लिए पतरस को धन देने की पेशकश की, और बदले में अपने पापों के लिए इस प्रेरित से खासी डांट खाई। आज भी जब उपदेशक के पद को खरीदने की बात होती है तो उस शमौन के नाम पर ऐसे व्यज़्ति को अंग्रेज़ी में शिमौनी कहा जाता है।

2. खोजे का मन परिवर्तन (8:26-40)। –इथियोपिया की रानी कंदाके का मंत्री

यरूशलेम की धार्मिक यात्रा करके घर लौट रहा था। फिलिप्पुस को परमेश्वर की ओर से गाजा को जाने वाले मार्ग पर भेजा जाता है। उनके रास्ते मिल जाते हैं। वह मंत्री यशायाह नबी की पुस्तक से पढ़ रहा है और फिलिप्पुस को उस भविष्यवाणी को समझाने के लिए अपने पास बुला लेता है। फिलिप्पुस उसे यीशु के बारे में बताता है। परिणामस्वरूप वह खोजा बपतिस्मा लेने के लिए कहता है। रथ रुकवाकर, दोनों मार्ग में एक तालाब में जाते हैं और फिलिप्पुस उसे बपतिस्मा देता है, और वह व्यक्ति नये मिले विश्वास में आनन्दित होकर चला जाता है। यह सम्भव है कि वह एक अन्यजाति था। यदि वह अन्यजाति था, तो यह अन्यजाति जगत में एक अकेले व्यक्ति का जाना था, और यरूशलेम में इसकी ओर किसी का ध्यान नहीं गया क्योंकि यह सब एक निर्जन क्षेत्र में हुआ था जहां कोई दूसरा व्यक्ति नहीं था। कइयों को तो यरूशलेम में उस समय पता भी नहीं होगा। अधिक सम्भावना यह है कि वह एक यूनानी भाषा बोलने वाला यहूदी था, जिनमें से अधिकतर को नहेमायाह की तरह अन्यजातियों के देशों में ऊंचे पद मिले थे। फिलिप्पुस कैसरिया में चला गया जहां हम उससे कई सालों बाद दोबारा मिलेंगे।

3. शाऊल का मन परिवर्तन और उसके प्रारम्भिक परिश्रम (9:1-30)। -पिन्तेकुस्त के बाद मसीही इतिहास में शाऊल का मन परिवर्तन सबसे महत्वपूर्ण घटना थी। उसकी कहानी तीन बार बताई गई है: लूका द्वारा (प्रेरितों 9), यहूदियों की भीड़ के सामने स्वयं पौलुस द्वारा (प्रेरितों 22) और अग्रिप्पा के सामने फिर पौलुस द्वारा (प्रेरितों 26)। किसी भी अन्य प्रेरित की अपेक्षा, पौलुस ने प्रारम्भिक कलीसिया पर अपना प्रभाव सबसे अधिक छोड़ा। लूका रचित सुसमाचार और प्रेरितों के काम सहित जो सम्भवत: पौलुस की प्रेरणा और निर्देशन में लिखे गए, नये नियम का आधे से अधिक भाग पौलुस द्वारा लिखा गया है।

शाऊल को हमने तीसरे सताव के आरम्भ में यरूशलेम में छोड़ा था। वह इस सताव का प्राण था। उसने जो कुछ भी किया वह पूरी सामर्थ से किया। परमेश्वर ने उसे ऐसा तब तक करने की अनुमति दी जब तक उसका सुसमाचार दूसरी जगहों पर पहुंचता रहा; परन्तु जैसे ही उसने दूर के इलाके दमिश्क में अपना आतंक फैलाना चाहा परमेश्वर ने हस्तक्षेप करके उसे रोक दिया। एक सेवक और गवाह बनाने अर्थात एक प्रेरित बनाने यीशु ने स्वयं उसे दर्शन दिया (प्रेरितों 26:16); अंधा होने की स्थिति में उसे दमिश्क में भेजा, जहां, तीन दिन के उपवास और प्रार्थना के बाद, उसे हनन्याह नामक एक चेले के पास जाकर बपतिस्मा लेने के लिए कहा गया। गलतियों की पत्री के पहले अध्याय को प्रेरितों के काम के नौवें अध्याय से मिलाने पर हमें पता चलता है कि वह दमिश्क में तुरन्त प्रचार करने लगा था; वह तीन वर्ष के लिए अरब में गया और वैसे ही सताव के तूफ़ान का सामना करने के लिए दमिश्क में वापस आया जैसा पहले उसने खड़ा किया था; बचकर यरूशलेम चला गया जहां बरनबास ने उसे अविश्वसनीय चेलों से परिचित करवाया। यहूदियों के एक षड्यन्त्र और परमेश्वर की ओर से एक दर्शन के द्वारा उसे अपने गृह तरसुस में भेजे जाने तक उसने यरूशलेम में दृढ़ता से प्रचार किया (प्रेरितों 22:17-21)। पौलुस जहां भी गया वहां वह एक सेवक या कर्मी के रूप में ही रहा; परन्तु कुछ सालों तक उसके परिश्रम पर अस्पष्टता का

पर्दा पड़ा रहा।

4. अन्यजातियों में जाना। -क. पतरस के माध्यम से; कुरनेलियुस का मन परिवर्तन (10)। -अब हम कहानी के एक नये मोड़ पर आते हैं। कलीसिया ने अपने नवजात होने के यहूदी शिशु वस्त्र निकालने हैं। यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की दूरी यहूदियों और सामरियों के बीच की खाई से चौड़ी और गहरी थी। परन्तु यह खाई मिटा दी गई थी। प्राय: परमेश्वर चुपके से एक दूसरे के लिए और उस घटना के लिए मनों को तैयार करके बड़ी घटनाओं के लिए तैयार करता है। यहां भी ऐसा ही हुआ।

क. कुरनेलियुस की तैयारी। -कैसरिया में, जो पलिश्तीन की राजनैतिक राजधानी थी, कुरनेलियुस नाम का एक रोमी सूबेदार रहता था। खतनारहित अन्यजाति होने के बावजूद वह जीवित परमेश्वर में विश्वास रखने वाला अर्थात श्रद्धालु, धर्मी और परोपकार करने वाला व्यक्ति था। परमेश्वर की ओर से मिले एक दर्शन से उसे शमौन पतरस को बुलाने के लिए समुद्र तट पर स्थित याफा में भेजा गया ताकि वह उसे उद्धार का मार्ग बता सके।

ख. पतरस की तैयारी। -हमने पतरस को सामरिया से यरूशलेम को वापस जाते हुए छोड़ा था। हम उससे लुद्दा में बाद में मिलते हैं जहां वह ऐनियास को चंगा करता है। उसके बाद, दोरकास की मृत्यु होने पर उसे याफा में बुला लिया गया। यहां उसने दोरकास को ज़िंदा किया; और कुरनेलियुस के संदेश लाने वालों को वह यहीं मिला। परन्तु पतरस के लिए भी उस घटना के लिए तैयार होना आवश्यक था। स्वर्ग की ओर से एक दर्शन के द्वारा उसे किसी मनुष्य को शुद्ध या अशुद्ध न कहने के लिए कहा जाता है और आत्मा उसे कुरनेलियुस के पास जाने को कहता है। कुरनेलियुस ने अपने परिवार तथा मित्रों को इकट्ठा किया हुआ था। पतरस ने उनमें प्रचार किया, और बपतिस्मे के द्वारा उन्हें कलीसिया में स्वीकार किया।

ग. पक्ष रखा गया। -यरूशलेम के पज्के यहूदी मसीहियों के लिए यह एक चौंकाने वाली घटना थी। किसी खतनारहित अन्यजाति के पूरे घराने के साथ धार्मिक और सामाजिक सज़्बन्ध बनाने का अर्थ मर्यादा का उल्लंघन करना था और पतरस को यरूशलेम में वापसी के समय इसका जवाब देने के लिए बुलाया गया। परन्तु परमेश्वर ने उसे एक उज़र उपलज़्ध करवा दिया। सामान्य ढंग के विपरीत, आत्मा अलौकिक ढंग से, उन्हें ग्रहण करने के लिए ईश्वरीय आदेश के रूप में, बपतिस्मे से पहले कुरनेलियुस के घराने पर उतरा था। यह ''अन्यजातियों का पिन्तेकुस्त'' था जिसमें परमेश्वर ने नये प्रस्थान पर मुहर लगा दी थी, और इस प्रकार कलीसिया द्वारा उसे आनन्द से स्वीकार कर लिया गया।

ख. यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों के द्वारा (11:19-30)। -जब ये घटनाएं घट रही थीं तो परमेश्वर अपनी कलीसिया को अन्यजाति जगत में कहीं व्यापक ढंग से प्रवेश कराने के लिए तैयार कर रहा था। पौलुस के सताव से तितर-बितर होने वालों ने फीनीके, कुप्रुस के टापू, और अन्ताकिया नगर में सुसमाचार पहुंचाया था। पहले वे केवल यहूदियों में ही प्रचार करते थे। लेकिन शीघ्र ही यरूशलेम में यह खबर आई कि यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों में से मसीही बनने वाले जाति के सभी बंधन तोड़कर अन्यजातियों में

प्रचार कर रहे थे। तुरन्त उन्होंने बरनबास को जो स्वयं भी यूनानी था, अन्ताकिया में भेजा।

क. एक नया अगुआ और नया केन्द्र। –बरनबास ने न केवल इस काम को अपनी स्वीकृति दी बल्कि वह शाऊल को ढूंढ़ने के लिए तरसुस को चला गया। यह याद रखा जाएगा कि बरनबास ही था जिसने यरूशलेम के चेलों से शाऊल का परिचय करवाया था; उसे ''पौलुस का मूल खोजी'' कहा जा सकता है। अंत में आदमी के लिए जगह और जगह के लिए आदमी मिल जाता है। अन्ताकिया एशिया में जनसंख्या और संस्कृति का बहुत बड़ा केन्द्र था; पौलुस, कलीसिया में सबसे उदार और सबसे शक्तिशाली आदमी है। पौलुस के अन्ताकिया में पहुंचते ही, पतरस और यरूशलेम पृष्ठभूमि में चले जाते हैं और पौलुस तथा अन्ताकिया सामने आते हैं। एक नया केन्द्र और नया अगुआ तैयार हुआ है, दोनों ही यरूशलेम और वहां के अगुओं की अपेक्षा सुसमाचार के विश्वव्यापी प्रचार के काम के लिए उपयुक्त हैं।

ख. नया नाम। –यह बड़े अर्थपूर्ण ढंग से लिखा गया है कि ''चेले सबसे पहले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।''[2] यह नाम यरूशलेम से आरम्भ नहीं हो सकता था, वहां तो सब चेले यहूदी ही थे, जिन्हें अन्यजातियों के लोग दूसरे यहूदियों से बड़ी मुश्किल से पहचान सकते थे। अन्ताकिया में चेलों का समूह मूर्तिपूजक लोगों में से निकला था। उनकी पहचान यहूदी और मूर्तिपूजक दोनों से ही अलग थी। नाम आवश्यक भी था और उपयुक्त भी।

5. यहूदियों द्वारा चौथा सताव। –पौलुस की मिशनरी यात्रा के मार्ग में जाने से पहले, लूका हमें यरूशलेम के मामलों की एक और झलक देता है। उस हेरोदेस के पोते, जिसने बैतलहम में बच्चों का कत्ल करवाया था, और उस हेरोदेस के भतीजे जिसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर कटवाया था, हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम ने हेरोदेसी परम्पराओं पर पूरा उतरते हुए खूनी सताव शुरू कर दिया। प्रेरित याकूब को कष्ट के अपने बपतिस्मे में शहादत मिली (मत्ती 20:22)। पतरस भी जेल में अपने ऐसे ही अंत की प्रतीक्षा कर रहा था कि कलीसिया की प्रार्थनाओं और परमेश्वर के स्वर्गदूत की सेवा के द्वारा उसे छुड़ाकर और बहुत से वर्षों के लिए परिश्रम के लिए बचाया गया। हेरोदेस एक भयंकर रोग से मर गया (44 ई.); ''परन्तु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया।''[3]

पाद टिप्पणियां

[1]प्रेरितों 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त के दिन होने वाले आश्चर्यकर्मों की समीक्षा करें। [2]प्रेरितों 11:26. [3]प्रेरितों 12:24.